Dr. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- dhabeerparasad@gmail.com

अन्तर्निरक्षण विधि

(INTROSPECTION METHOD)

अंतर्निरीक्षण विधि मनोविज्ञान की पहली विधि है। इस विधि का व्यवहार सबसे पहले उण्ट ने किया।उण्ट ने1879 में लिपजिग में मनोविज्ञान की पहली प्रयोगशाला की स्थापना की और चेतन अनुभूति का अध्ययन अंतर्निरीक्षण विधि द्वारा किया। उन्होंने चेतन अनुभूति को मनोविज्ञान का विषयवस्तु और अंतर निरीक्षण को विधि माना। अंतर्निरीक्षण का अर्थ अपने भीतर देखना होता है।अतः अंतर्निरीक्षण वह विधि है जिसके द्वारा

व्यक्ति अपने चेतन अनुभूतियों का निरीक्षण स्वयं करता है और उन्हें अपने शब्दों में व्यक्त करता है। चैपलिन ने इसकी व्याख्या करते हुए कहा है कि "अंतर्निरीक्षण चेतन घटक के तत्व तथा गुणों के वस्तुनिष्ठ विवरण को कहते हैं"।

इस प्रकार इस परिभाषा से स्पष्ट है कि अंतर निरीक्षण के लिए दो बातें आवश्यक है। एक बात तो यह है कि इस विधि में व्यक्ति अपने चेतन अनुभव का वर्णन उसी रूप में करता है जिस रूप में अनुभव होता रहता है और वर्णन कि प्रक्रिया उसी समय तक चलती है जब तक अनुभव कि क्रिया चलती रहती है। अनुभव के समाप्त हो जाने पर यदि उसका वर्णन किया जाए तो उसे अंतर्निरक्षण नहीं कहा जाएगा ।दूसरी बात यह है कि इस विधी में निरक्षक को चेतन अनूभूति के रचनात्मक तत्वो का वर्णन करना होता है। उण्ट के अनुसार चेतन अनुभूति के तीन रचनात्मक तत्व है, जिन्हे संवेदना, भाव तथा प्रतिबिम्ब कहते है।

अंतर्निरक्षण विधि के खई गुण होते है-

1. अपूर्व विधि:- अंतर्निरक्षण विधि की एक विशेषता तह है कि इसमे अपूर्वता का गुण पाया जाता है। इस विधि का व्यवहार केवल मनोविज्ञान में होता है, किसी दूसरे विज्ञान में नहीं। इस विधि के कारण मनोविज्ञान दूसरे विज्ञानों से भिन्न हो जाता है।
2. प्रत्यक्ष विधि:- इस विधि का एक गुण यह भी है कि इसके द्वारा चेतन अनुभूति का सीधा अध्ययन सम्भव होता है। इस विधि मे व्यक्ति अपनी चेतन अनुभूति के रचनात्मक तत्वों तथा गुणों का अध्ययन स्वयं करता है। यह गुण मनोविज्ञान कि किसी भी दूसरी विधि में नहीं पाया जाता है।
3. संरचनात्मक विधि:- इस विधि का एक गुण यह है कि चेतन अनुभूति की रचना के अध्ययन के लिए केवल अन्तःनिरक्षण ही सफल है। यदि हम इस बात को मान ले कि मनोविज्ञान का अध्ययन विषय चेतन

अनुभूति है, तो फिर इसके अध्ययन के लिए अन्तर्निरक्षण विधि आवश्यक हो जाती है।

4. सरल विधि:- इस विधि की सरलता भी इसका एक महत्वपूर्ण गुण है। इस विधि में जो कार्य विधि अपनाई जाती है वह दूसरी विधियों की कार्य-विधि की तुलना में सरल होती है।
5. विश्वसनीय विधि:- यह विधि विश्वसनीय प्रमाणित हो सकती है, यदि व्यक्ति ईमानदारी तथा तटस्था के साथ अपने चेतन अनुभवों का अध्ययन करे और उसका वर्णन करे। कारण यह है कि इस विधि में व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से अपने चेतन अनुभवों का निरक्षण करता है और उनके वास्तविक रूप से अवगत रहता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि अन्तरनिरक्षण-विधि में कई तरह के गुण पाये जाता है। परन्तु गुणों के साथ-साथ कुछ अवगुण भी इस विधि में पाया गए है। इसलिए इस विधि की उपयोगता सीमित हो गयी है।